दिनांक: **28 अगस्त 2023**

जल जीवन मिशन के आलोक में विश्व जल सप्ताह

इस लेख में "दैनिक करंट अफेयर्स" और विषय विवरण "जल जीवन मिशन के प्रकाश में विश्व जल सप्ताह" शामिल है। संघ लोक सेवा आयोग के सिविल सेवा परीक्षा के सामाजिक न्याय अनुभाग में "जल जीवन मिशन के प्रकाश में विश्व जल सप्ताह" विषय की प्रासंगिकता है।

प्रीलिम्स के लिए:

- *जल जीवन मिशन के बारे में?*

मुख्य परीक्षा के लिए:

- *सामान्य अध्ययन-02: **सामाजिक न्याय***
- *भारत में वर्तमान जल संसाधन प्रबंधन चुनौतियां?*
- *जल संसाधन प्रबंधन के लिए आगे का रास्ता?*

सुर्खियों में क्यों?

- विश्व जल सप्ताह, एक वार्षिक वैश्विक जल मंच, स्टॉकहोम अंतर्राष्ट्रीय जल संस्थान के तत्वावधान में 20-24 अगस्त, 2023 तक आयोजित किया जाएगा। इस वर्ष की थीम "परिवर्तन के बीज: जल-समझदार दुनिया के लिए अभिनव समाधान" है, जो वर्तमान में पानी से जुड़ी समस्याओं के समाधान में नवाचार के महत्व पर जोर देती है।
- जल जीवन मिशन जिसे 2019 में स्थापित किया गया था, का लक्ष्य वर्ष 2024 तक सभी ग्रामीण भारतीय परिवारों को व्यक्तिगत नल कनेक्शन के माध्यम से सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल तक पहुंच प्रदान करना है। यह महत्वाकांक्षी परियोजना पिछले कार्यक्रम की कमियों में सुधार करना चाहती है।

पिछले ग्रामीण जल आपूर्ति अनुभवों और चुनौतियों के माध्यम से जल जीवन मिशन को आकार देना: –

Har Ghar Jal
Jal Jeevan Mission

ऐतिहासिक प्रयास और उनकी सीमाएँ:-

प्रारंभिक चरण (1950-1960):

- पहली पंचवर्षीय योजना (1951-1956) ने ग्रामीण क्षेत्रों की पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए आधार तैयार किया।
- हालाँकि, इसने बड़े पैमाने पर कई दूरदराज के क्षेत्रों को नजरअंदाज कर दिया और उन गांवों पर ध्यान केंद्रित किया जो आसानी से पहुंच योग्य थे।

राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल आपूर्ति कार्यक्रम (1969):

- यूनिसेफ की सहायता से बोरवेल और पाइप से पानी के कनेक्शन स्थापित किए गए, लेकिन कवरेज असमान था।

बदलते दृष्टिकोण (1970-1980 के दशक):

- त्वरित ग्रामीण जल आपूर्ति योजना (एआरडब्ल्यूएस) और न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम जैसी पहल शुरू की गईं, लेकिन कार्यान्वयन और कवरेज चुनौतियां बनी रहीं।

मिशन विकास (1986-1996):

- एआरडब्ल्यूएस राष्ट्रीय पेयजल मिशन और बाद में राजीव गांधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन (1991) के रूप में विकसित हुआ।
- जलापूर्ति की जिम्मेदारी पंचायती राज संस्थाओं को सौंपी गई।

दोष और अंतराल (2002-2007):

- भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सीएजी) की रिपोर्ट के अनुसार, 2002 और 2007 के बीच, मौजूदा योजनाओं द्वारा इच्छित बस्तियों का लगभग आधा हिस्सा ही कवर किया जा सका।

हर घर जल कार्यक्रम (2017):

- हर घर जल पहल, जिसका उद्देश्य हर ग्रामीण घर को पाइप से पानी देना है, सरकार द्वारा 2017 में शुरू की गई थी।
- हालाँकि, पेयजल और स्वच्छता विभाग ने बताया कि 1 अप्रैल, 2018 तक, केवल 20% ग्रामीण घर पानी के पाइप से जुड़े थे।

पिछली योजनाओं की कमियां:

- **अस्थिर जल स्रोत:** भूजल पर निर्भरता के कारण यह कमी देखी गई, जिससे शुरू में कवर किये गए कुछ गाँवों की समय के साथ जल तक पहुँच में कमी आई।
- **सामुदायिक स्वामित्व की कमी:** अपर्याप्त सामुदायिक स्वामित्व के परिणामस्वरूप खराब बुनियादी ढांचे का रखरखाव और कार्यक्षमता हुई।
- **पारदर्शिता की कमी:** सीमित सार्वजनिक जागरूकता और भागीदारी ने प्रगति और जागरूकता प्रयासों में बाधा डाली।
- **निधियों का कुप्रबंधन:** पर्याप्त निवेश के बावजूद, अक्षम निधि आवंटन और उपयोग जारी रहा, जिससे जल आपूर्ति की समस्या बनी रही।

जल जीवन मिशन के लिए सीख:

- **विविध जल स्रोत:** जल जीवन मिशन सतही जल और भूजल स्रोतों दोनों को शामिल करके इसे संबोधित करता है, जबकि उन्हें पुनर्भरण और संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **सामुदायिक जुड़ाव:** मिशन सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए समुदायों को संवेदनशील बनाने और सभी स्तरों पर अधिकारियों को उत्तरदायी बनाने पर ज़ोर देता है।
- **जानकारी साझा करना:** प्रगति डेटा को एक केंद्रीय डैशबोर्ड के माध्यम से साझा किया जाता है, पारदर्शिता, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और त्वरित कार्रवाई को बढ़ावा देता है।
- **समग्र दृष्टिकोण:** मिशन आपदा तत्परता, तकनीकी प्रगति, थोक जल हस्तांतरण और ग्रेवाटर के प्रबंधन सहित एक व्यापक रणनीति अपनाता है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य पिछली पहलों में देखी गई कमियों को दूर करना है।
- **समग्र दृष्टिकोण:** मिशन एक संपूर्ण दृष्टिकोण का उपयोग करता है जो तकनीकी प्रगति, पर्याप्त जल हस्तांतरण, आपदा तत्परता और गंदे पानी के प्रबंधन को ध्यान में रखता है। इस रणनीति का लक्ष्य पहले के प्रयासों में पाई गई कमियों को दूर करना है।

जल जीवन मिशन की वर्तमान स्थिति:

- जल जीवन मिशन (ग्रामीण) का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि 2024 तक कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन (एफएचटीसी) के माध्यम से प्रत्येक ग्रामीण परिवार को प्रति व्यक्ति प्रति दिन 55 लीटर पानी उपलब्ध हो।
- यह जल शक्ति मंत्रालय के तहत काम करता है।
- इसके अलावा, जल जीवन मिशन (शहरी) यह सुनिश्चित करना चाहता है कि भारत के सभी 4,378 वैधानिक शहरों में सार्वभौमिक जल आपूर्ति कवरेज तक पहुंच हो, जो जल जीवन मिशन (ग्रामीण) का पूरक है।

वर्तमान प्रगति:-

- 3 जनवरी 2023 तक लगभग 108.7 मिलियन ग्रामीण परिवारों को 56.14% को कार्यात्मक नल के पानी के कनेक्शन प्रदान किए गए हैं।

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

- मिशन अब आगामी दो वर्षों के भीतर अतिरिक्त 76.3 मिलियन ग्रामीण परिवारों (47.3%) को इस कवरेज का विस्तार करने की चुनौती का सामना कर रहा है।
- कार्यक्रम डैशबोर्ड के अनुसार, नौ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने हर घर जल का दर्जा प्राप्त कर लिया है, जिससे यह गारंटी मिलती है कि सभी ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होगा। ये हैं गुजरात, तेलंगाना, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, गोवा, पुडुचेरी, दमन और दीव और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह।

नोट: भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया जल जीवन मिशन (शहरी), जो जल जीवन मिशन (ग्रामीण) का पूरक है और इसका लक्ष्य भारत के सभी 4,378 वैधानिक शहरों में कार्यात्मक नल प्रदान करना है।

भारत में वर्तमान जल संसाधन प्रबंधन चुनौतियां:

भूजल की कमी और शहरीकरण:
- तेजी से हो रहे शहरीकरण ने भूजल की कमी को और भी बड़ी समस्या बना दिया है।
- बढ़ते शहरीकरण के परिणामस्वरूप, भूजल निष्कर्षण अत्यधिक तीव्र हो गया है।
- मिट्टी की सतह अभेद्य चीज़ों से ढक जाती है, जिससे भूजल पुनर्भरण कम हो जाता है।

अंतरराज्यीय जल विवाद और संघवाद:
- राज्यों के बीच जल संसाधनों के बंटवारे पर संघर्ष, जैसे कावेरी नदी विवाद, राज्य की स्वायत्तता और राष्ट्रीय हितों के बीच संतुलन को रेखांकित करते हैं।

पानी की गुणवत्ता और स्वास्थ्य:
- औद्योगिक निर्वहन, कृषि अपवाह और खराब स्वच्छता से जल संदूषण के परिणामस्वरूप जलजनित बीमारियां होती हैं, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में।

लिंग गतिशीलता और जल संग्रह:
- ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं और लड़कियां अक्सर पानी के संग्रह का बोझ उठाती हैं, उनकी शिक्षा और आर्थिक अवसरों को सीमित करती हैं जबकि उन्हें सुरक्षा जोखिमों के लिए उजागर करती हैं।

जलवायु परिवर्तन और ग्लेशियल रिट्रीट:
- हिमालय में ग्लेशियल रिट्रीट, जो कई भारतीय नदियों के लिये एक प्रमुख जल स्रोत, जलवायु परिवर्तन के कारण घट रहे हैं। इससे दीर्घावधि में पानी की कमी हो सकती है, सिंचाई और पीने के प्रयोजनों के लिए दीर्घकालिक जल उपलब्धता को खतरे में डालता है।

अक्षम अपशिष्ट जल प्रबंधन:
- अपर्याप्त अपशिष्ट जल प्रबंधन जल संसाधनों की आर्थिक क्षमता को कम करता है।
- हाल ही में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट (मार्च 2021) ने अपर्याप्त पानी और सीवेज उपचार क्षमताओं पर प्रकाश डाला, जिससे प्रभावी जल उपयोग में बाधा उत्पन्न हुई।

जल संसाधनों का प्रबंधन:

आगे का रास्ता

स्थानीयकृत जल संसाधन प्रबंधन:
- जल जीवन मिशन को संसाधन स्थिरता और जल आपूर्ति प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- स्थानीय स्तर पर कुशल वाटरशेड प्रबंधन लागू किया जाए और घरेलू वर्षा जल संग्रहण को अनिवार्य करें।
- एक समृद्ध समाज के लिए जल स्वास्थ्य और मानव स्वास्थ्य के बीच सामंजस्य सुनिश्चित करना आवश्यक है।

जल पदचिह्न लेबलिंग:
- कार्बन फुटप्रिंट लेबल के समान उत्पादों के लिए एक जल पदचिह्न लेबलिंग प्रणाली शुरू किया जा सकता हैं।
- उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले पानी के बारे में उपभोक्ताओं की जागरूकता बढ़ाकर जल-कुशल वस्तुओं की मांग को बढ़ावा दिया जा सकता हैं।

जल-ऊर्जा एकीकरण प्रबंधन:
- संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करने के लिये जल और ऊर्जा प्रबंधन रणनीतियों को एकीकृत करना। उदाहरण के लिये विद्युत संयंत्रों में शीतलन के लिये उपचारित अपशिष्ट जल का उपयोग करना तथा जल शुद्धिकरण के लिये औद्योगिक प्रक्रियाओं से अतिरिक्त ऊष्मा का उपयोग करना।

जल विज्ञान पर शहरी नियोजन

- जल-उत्तरदायी शहरी नियोजन को लागू करें जो शहरों को पानी की उपलब्धता के अनुकूल बनाता है।
- अनुकूलनीय बुनियादी ढांचे जैसे कि गतिशील बाढ़ अवरोधक, लचीली जल निकासी प्रणाली और मॉड्यूलर इमारतें शामिल हैं जो बदलते जल स्तर को समायोजित करती हैं।

भारत इन उपायों को लागू करके अपने जल संसाधनों का बेहतर प्रबंधन, स्थिरता में सुधार कर,समस्याओं का समाधान कर सकता है और एक लचीले और जल-सुरक्षित भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

स्रोत:
https://www.downtoearth.org.in/news/water/world-water-week-2023-demand-and-pollution-of-the-precious-resource-are-increasing-which-is-not-a-good-sign-91220

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न-

प्रश्न-01 जल जीवन मिशन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत एक मिशन है।
2. इसमें शहरी घटक नहीं है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: d

प्रश्न 2 'जल ऋण' के संबंध में, कृपया निम्नलिखित कथनों का मूल्यांकन करें:

1. यह पहल जल और स्वच्छता क्षेत्र के भीतर माइक्रोफाइनेंस रणनीतियों का उपयोग करती है।
2. यह विश्व स्वास्थ्य संगठन और विश्व बैंक के सहयोग से शुरू किया गया एक विश्वव्यापी प्रयास है।
3. इसका उद्देश्य आर्थिक रूप से वंचित व्यक्तियों को अपनी पानी की आवश्यकताओं को स्वायत्त रूप से पूरा करने के लिए सशक्त बनाना है, जिससे सब्सिडी पर निर्भरता कम हो जाती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: c

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न-03 जल संसाधन परिदृश्य में गिरावट के बीच विवेकी जल उपयोग के लिये जल भंडारण और सिंचाई प्रणाली में सुधार के उपायों को सुझाइये।

Rajiv Pandey

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

भारत न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम

इस लेख में "दैनिक करंट अफेयर्स" और विषय विवरण "भारत न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम (भारत एनसीएपी)" शामिल है। यूपीएससी सीएसई परीक्षा के "अर्थव्यवस्था" खंड में "भारत न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम (भारत एनसीएपी)" विषय की प्रासंगिकता है।

प्रीलिम्स के लिए:

- *भारत न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम (भारत एनसीएपी) क्या है?*
- *ग्लोबल न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम क्या है?*

मुख्य परीक्षा के लिए:

- *सामान्य अध्ययन-03:अर्थव्यवस्था*

सुर्खियों में क्यों?

- हाल ही में, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने टकराव में शामिल वाहनों की सुरक्षा का आकलन करने के लिए एक स्वदेशी स्टार-रेटिंग प्रणाली लागू की है।

भारत नई कार मूल्यांकन कार्यक्रम (NCAP)

- भारत न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम (BHARAT NCAP) के रूप में जानी जाने वाली प्रणाली का उद्देश्य उपभोक्ताओं को कार खरीदते समय मूल्यवान सुरक्षा जानकारी प्रदान करना है।
- यह पहल, जो 1 अक्टूबर, 2023 को शुरू होने वाली है, भारत की यातायात मृत्यु दर की चिंताजनक उच्च दर को संबोधित करने के लिए डिज़ाइन की गई है।

Parameter	Bharat NCAP	Global NCAP
Safety Rating Categories	• Requires 27 points for 5-star rating in adult occupant protection. • Requires 41 points for 5-star rating in child occupant protection.	• Requires a minimum of 34 points for a 5-star safety rating in adult occupant protection. • (16 points for front crash test, 16 for side impact, 2 for seatbelt reminders)
Types of Crash Testing	• Uses three crash tests: offset deformable barrier frontal impact test, side impact test, and pole side impact test. • Mandates additional safety features like six airbags, electronic stability control (ESC), improved emergency braking systems, etc.	• Utilizes similar crash testing protocols: offset deformable barrier frontal impact test, side impact test.
Top Speed for Crash Tests	• Frontal crash test at 64 km/h. • Side impact test at 50 km/h. • Pole-side impact test at 29 km/h.	• Speeds for frontal and side impact tests might vary but are generally around 64 km/h and 50 km/h, respectively.
Variety of Cars	• Applies to CNG and EVs, rating them based on performance.	• Primarily focused on conventional internal combustion engine vehicles.
Unified Rating	• Provides a single unified rating for both adult and child occupant protection.	• May have separate ratings for adult and child occupant protection.

भारत एनसीएपी के उद्देश्य और प्रभाव-

- भारत एनसीएपी का मुख्य लक्ष्य ग्राहकों को सुरक्षा संबंधी ज्ञान प्रदान करना है ताकि वे कार खरीदने के बारे में बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय ले सकें।
- कार्यक्रम का उद्देश्य सुरक्षित वाहनों की मांग बढ़ाना है जिससे भारत में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने में योगदान देना है।

- देश वर्तमान में सड़क दुर्घटना से संबंधित मौतों की एक उच्च संख्या का अनुभव करता है, जो दुनिया के वाहनों का केवल 1% होने के बावजूद वैश्विक सड़क दुर्घटना से होने वाली मौतों का 10% है।
- यह देखते हुए कि सड़क दुर्घटनाओं से देश को सालाना सकल घरेलू उत्पाद का 5 से 7 प्रतिशत नुकसान होता है, यह पहल सड़क सुरक्षा में सुधार के अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के अनुरूप है और इसमें भारत की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की क्षमता है।

भारत एनसीएपी का दायरा और मानदंड-

- भारत एनसीएपी उन यात्री वाहनों पर लागू होता है जिनमें चालक की सीट को छोड़कर अधिकतम आठ सीटें होती हैं और वाहन का सकल वजन 3,500 किलोग्राम से अधिक नहीं होता है।
- कार्यक्रम जल्द ही प्रकाशित होने वाले ऑटोमोटिव इंडस्ट्री स्टैंडर्ड 197 के अनुसार क्रैश टेस्ट आयोजित करके वाहनों का मूल्यांकन करेगा।
- क्रैश टेस्ट नामांकित कार वेरिएंट के बेस मॉडल पर केंद्रित होगा।

सुरक्षा मूल्यांकन तीन प्रमुख मापदंडों पर आधारित होगा:

- **वयस्क यात्री सुरक्षा:** यह मापती है कि टक्कर की स्थिति में कार वयस्क यात्रियों की कितनी अच्छी तरह रक्षा करती है।
- **बाल यात्री सुरक्षा:** यह बाल यात्रियों को को दी जाने वाली सुरक्षा के स्तर का आकलन करता है।
- **सुरक्षा सहायता तकनीकें:** यह वाहन में सुरक्षा सुविधाओं की उपस्थिति और प्रभावशीलता की जांच करता है।

क्रैश टेस्ट और मूल्यांकन-

- **फ्रंटल ऑफसेट टेस्ट: इस परीक्षण में, एक** वाहन को 64 किमी / घंटा की गति से चलाया जाता है, जिसमें 40% ओवरलैप एक विकृत बाधा में होता है, जो समान वजन की दो कारों के बीच टक्कर का प्रभाव देखा जाता है।
- **साइड इम्पैक्ट टेस्ट:** यह परीक्षण 50 किमी / घंटा पर साइड टक्कर का अनुकरण करता है।
- **पोल–साइड इम्पैक्ट टेस्ट**: 29 किमी/घंटा की गति से यात्रा कर रही एक कार एक कठोर पोल से टकराती है।

इन परीक्षणों के निष्कर्षों के आधार पर वाहनों को एक स्टार से लेकर पांच स्टार तक की स्टार रेटिंग दी जाएगी। यह वाहन सुरक्षा के मामले में जितना बेहतर प्रदर्शन करेगा, स्टार रेटिंग उतनी ही अधिक होती है।

स्वैच्छिक भागीदारी और अपवाद-

- भारत एनसीएपी में भागीदारी ऑटोमोबाइल निर्माताओं के लिए स्वैच्छिक है। हालांकि, कुछ परिदृश्यों में अनिवार्य परीक्षण की आवश्यकता हो सकती है:-
- 30,000 इकाइयों की न्यूनतम बिक्री के साथ एक लोकप्रिय संस्करण का बेस मॉडल।
- बाजार प्रतिक्रिया या सार्वजनिक सुरक्षा चिंताओं के आधार पर सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की सिफारिशें।

ग्लोबल एनसीएपी-

- भारत एनसीएपी के परीक्षण प्रोटोकॉल ग्लोबल एनसीएपी से प्रेरित हैं, जो यूके स्थित एनजीओ, टूवर्ड्स जीरो फाउंडेशन के नेतृत्व में एक पहल है।
- ग्लोबल एनसीएपी विभिन्न देशों में वाहन सुरक्षा का आकलन करने के लिए एक सहयोगी मंच के रूप में कार्य करता है।

आगे देखना:-

- भारत एनसीएपी के सार्थक कार्यान्वयन के लिए भारत को क्रैश परीक्षण क्षमताओं और ज्ञान को विकसित करने की आवश्यकता है।
- कारों में डमी से जुड़ा एक सॉफ्टवेयर सिस्टम चोट की प्रकृति और सीमा का आकलन करने के लिए आवश्यक है।
- जैसा कि भारत अपनी सड़कों को सुरक्षित बनाने का प्रयास कर रहा है, यूएस एनसीएपी और जापान के एनसीएपी जैसे अंतरराष्ट्रीय समकक्षों से सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने से वाहन सुरक्षा के लिए एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण में योगदान मिलेगा, न केवल यात्रियों बल्कि पैदल चलने वालों और अन्य सड़क उपयोगकर्ताओं की भी सुरक्षा होगी।

स्रोत: भारत न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम क्या है? – द हिंदू

प्रश्न-01. भारत NCAP के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारी उद्योग मंत्रालय ने भारतीय बाजार में ऑटोमोबाइल की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम (एनसीएपी) पेश किया है।
2. कार्यक्रम का उद्देश्य कानूनी सुरक्षा उपायों के माध्यम से सुरक्षित कारों की आपूर्ति करना है।
3. भारत एनसीएपी की परीक्षण प्रक्रियाएं ग्लोबल एनसीएपी से प्रेरणा लेती हैं, जो संयुक्त राष्ट्र की पहल के रूप में काम करती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 3
(d) कोई नहीं

उत्तर: (d)

प्रश्न-02. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत एनसीएपी कार्यक्रम भारत में बढ़ती प्रदूषण दर को संबोधित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
2. भारत एनसीएपी अधिकतम आठ सीटों वाले यात्री वाहनों पर लागू होता है और सकल वाहन वजन 3,500 किलोग्राम से अधिक नहीं होता है।
3. भारत एनसीएपी के तहत सुरक्षा मूल्यांकन में इंजन प्रदर्शन और ईंधन दक्षता जैसे पैरामीटर शामिल हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) उपरोक्त में सभी।
(d) उपरोक्त में कोई नहीं

उत्तर: (a)

प्रश्न-03. सड़क सुरक्षा संबंधी चिंताओं को दूर करने में भारत न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम (भारत एनसीएपी) के महत्व पर चर्चा करें, विशेष रूप से भारत के उच्च सड़क दुर्घटना के आंकड़ों के प्रकाश में।

Rajiv Pandey

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com